---

भगवान श्री आदि शंकराचार्य रचित

व्याख्याकार

स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती

---

# खण्ड - १

## अनुक्रमणिका

## प्रस्तावना

## भूमिका

आत्मबोध वेदान्त के एक छोटे लेकिन अति सुन्दर प्रकरण ग्रन्थ का नाम है । ग्रन्थ के रचयिता भगवान शंकराचार्य है। यथा नाम इस ग्रन्थ में आचार्यश्री ने अपनी वास्तविकता को जानने के रहस्य एवं प्रक्रिया उद्घाटित करते हैं।

हम सब लोगों के जीवन का आधार हम सब स्वयं ही होते हैं। जब से 'हम' इस जगत् रूपी नाटक मंच पर आये तब ही से 'हमारे' जीवन का नाटक चल रहा है । जब हम नहीं होंगें तब हमारा जीवन भी नहीं होगा। हम अपने जीवन को अस्तित्व तो प्रदान करते ही हैं, साथ-साथ जीवन की दिशा भी हम स्वयं ही प्रदान करते हैं।

हमारी अपने बारे में विद्यमान अवधारणा ही हमारे जीवन को दिशा प्रदान करती है। अगर हम अपने आपको खेल-प्रेमी देखते हैं तो हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति खेल के प्रति हो जाएगी। अगर हम अपने आपको गरीब मान बैठते हैं तो हमारी प्रवृत्ति विशिष्ट धनार्जन में हो जाती है। हम सबकी विविध प्रवृत्तियां केवल अपने बारे में विद्यमान मान्यताओं पर निर्भर होती हैं। हम अपने आप को कुछ भी मानने को स्वतन्त्र हैं, लेकिन प्रश्न यह होता है कि वस्तुतः हम कौन हैं ?

अपने बारे में विविध मान्यताओं का होना अपने बारे में स्पष्ट ज्ञान के अभाव का द्योतक है। मंद प्रकाश में पड़ी रस्सी को सांप आदि तभी मान लिया जाता है जब रस्सी का स्पष्ट ज्ञान न हो। मान्यताएं अनावश्यक हो जाती हैं जब प्रामाणिक ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। अपनी निराधार प्रवृत्तियों से तत्क्षण ही मुक्ति हो जाती है ।

आत्मा का ज्ञान बाकी सभी ज्ञानों से बहुत विलक्षण होता है। अनात्मा के ज्ञान में ज्ञेय पदार्थ अपने सामने होता है, अतः वह स्पष्ट होता है, लेकिन आत्मा के ज्ञान में जानने वाले को ही जानना है। जो सबको प्रकाशित करता है, लेकिन जिसे कोई प्रकाशित नहीं कर सकता है, उस प्रकाशक को कौन और कैसे प्रकाशित करे? प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों की यहां प्रवृत्ति नहीं होती है। इस स्वप्रकाश तत्व को केवल ज्ञानवान के शब्द ही प्रकाशित कर सकते हैं। इस दिव्य ज्ञान की परम्परा साक्षात् परमात्मा से ही प्रारम्भ हुई, जिन्होंने सृष्टि के आदि में वेदों के माध्यम से इस रहस्य को मानव मात्र के लिए उद्घाटित किया। इसी ज्ञान को भगवान शंकराचार्य जैसे आचार्यो ने अति स्पष्टता से हमें बताने का प्रयास किया है। आत्मबोध इसी ज्ञान को सरलता से प्रतिपादित करता है। कुल मिलाकर इस प्रकरण ग्रन्थ में ६६ श्लोक है। इस ग्रंथ का प्रथम श्लोक ग्रन्थ के अनुबन्ध चतुष्टय का प्रतिपादन करता है।

## ग्रंथकार का परिचय

आज से १२०६ वर्ष पूर्व वैशाख शुक्ल पंचमी के शुभ दिन केरल स्थित कालड़ी नामक ग्राम में भगवान सदाशिव स्वयं ही श्री आदि शंकराचार्य के रूप में अवतरित हुए थे। केरल की पुण्यभूमि पर एक से एक महान मनीषियों, संतो, तपस्वियों ने जन्म लेकर मानव मात्र को सद्जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है। वेदोक्त सनातन, शाश्वत जीवन दर्शन एवं धर्म के आचार्यों में भगवान श्री आद्य शंकराचार्य का स्थान निश्चित रूप से सर्वोपरि है। उनके द्वारा प्रदत्त उदार जीवनदर्शन एवं उनके द्वारा किए गए अथक प्रयासों से, विविध विधटित संप्रदायों को सत्य के एक सूत्र में पिरोया गया था। शंकराचार्यजी को हम भगवान के अवतार की तरह इसलिए स्वीकार करते है, क्योंकि, जो महान कार्य उन्होंने अत्यंत अल्पायु में किए-वो एक साधारण मानव के लिए असंभव प्रतीत होते है।

## वेदोक्त ज्ञान का प्रसार

वेद वे प्रामाणिक ग्रंथ हैं जो जीवन की जटि़ल पहेली का हमें प्रामाणिक उत्तर प्रदान करते हैं। परम्परा अनुसार वेदों का ज्ञान सदैव किसी श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ से ही प्राप्त करना चाहिए। विश्वभर में जहाँ भी किसी सामाजिक क्रांति का आविर्भाव हुआ है, वहाँ सत्य को ही उद्घाटित कर प्रचलित मोह को समाप्त किया गया था। आचार्य शंकर के समय भी इस जटि़ल जीवन की पहेली को न बूझ पाने का कारण दो प्रकार की अतियाँ विशेष रूप से प्रचलित हो गई थी, जिनको भगवत्पाद ने अपने ज्ञान के प्रकाश से दूर कर एक अत्यंत दूरगामी सामाजिक क्रांति का शुभारम्भ किया था। एक तरफ वेदों में आस्था रखने वाले वेदों के समग्र ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण कर्मकांड को ही मोक्ष प्रतिपादक भाग समझ बैठे थे, तो दूसरी तरफ कर्मकांड का उचित स्थान तथा प्रयोजन न जानने के कारण एवं कर्मकांड से प्रचलित कुछ कुरीतियों के कारण बौद्धों ने प्रतिक्रिया स्वरूप वेदों का ही खंडन करना प्रारंभ कर दिया था। ये दोनों अतियाँ त्याज्य थी, जिन्हें भगवत्पाद ने अपने दिव्य ज्ञान के प्रकाश से इन्हें दूर कर वेदोक्त दिव्य ज्ञान की सुगंध पूरे देश में फैला दी थी। आचार्य शंकर का अपना कोई पृथक् दर्शन नहीं था, वे तो वेद का ही वास्तविक रहस्य उद्घाटित कर वेदों की प्रामाणिकता एवं मर्यादा की पुनःस्थापना करने के प्रति समर्पित थे। उनका जीवन ऐसे लोगों को पुनर्विचार के लिए प्रेरित करता है जो थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान को अपने नाम से जोड़कर अपने संप्रदाय बनाने में ज्यादा इच्छुक होते हैं। वेदों का संदेश जीवन में 'एकमेव अद्वितीय' दिव्य सत्ता का संदेश है। अतः उनका हेतु किसी दर्शन का खंडन करना मात्र नहीं था और न ही वे किसी अन्य दर्शन के प्रतिस्पर्धी की तरह खड़े हुए। उन्होंने समस्त दर्शनों का जीवन के इस परम लक्ष्य 'अद्वैत साक्षात्कार' में स्थान बताया और एक समन्वित दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके समस्त भाष्य, काव्य, स्तोत्र या अन्यान्य रचनाओं में एक अद्भुत समन्वय दिखाई पड़ता है। ये समस्त रचनाएँ न केवल उनके सर्वात्मभाव को उद्घाटित करती है, बल्कि एक पूर्ण विकसित मानव का हमारे समक्ष जीवंत दृष्टान्त प्रस्तुत करती हैं।

## आचार्य का संदेश

प्रत्येक मनुष्य का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह शाश्वत, दिव्य, कालातीत सत्ता को अपनी आत्मा की तरह से जानकर मोक्षानंद का पान करें। इस अन्तः जागृति के लिए केवल ज्ञान मात्र की अपेक्षा होती है, लेकिन ईश्वर से ऐक्य का ज्ञान तभी संभव होता है जब ईश्वर के प्रति प्रगाढ भक्ति-भाव विद्यमान हो। ऐसी भक्ति एकदेशीय न होकर सार्वकालिक होनी चाहिए, अतः भक्त के प्रत्येक कर्म उत्साह से युक्त, निष्काम एवं सुंदर होने अवश्यंभावी है। इस तरह से समस्त ज्ञान, भक्ति एवं कर्म प्रधान साधनाओं का सुंदर समन्वय हो जाता है। जो भी मनुष्य ऐसी दृष्टि का आश्रय लेता है वह अपने धर्म, अर्थ काम एवं मोक्ष रूपी समस्त पुरुषार्थों की सिद्धि कर परम कल्याण को प्राप्त होता है।

## आज भगवत्पाद की पुनः आवश्यकता

आचार्य शंकर के आगमन के समय देश जिन विकट परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा था वही समस्याएँ आज भी नज़र आती हैं। धर्म के नाम पर संप्रदाय विधटित होते जा रहे हैं। भिन्न-भिन्न मतावलम्बी अपने-अपने संप्रदायों के प्रति आस्था रखे हुए अपनी अलग पहचान बनाने के लिए आतुर है। धर्म के नाम पर सत्य की खोज एवं उसमें जागृति गौण हो गई है, तथा अन्य प्रयोजन प्रधान हो गए हैं। आज जहाँ एक तरफ विज्ञान एवं उन्नत प्रोद्यौगिकी लोगों की दूरी को कम कर रही है, वहीं दूसरी तरफ धर्म के नाम पर कट्टरता मनुष्यों के बीच के फासले एवं विद्वेष बढ़ाती जा रही है। आत्मीयता-स्वरूप जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टि प्राप्त होनी चाहिए, उसके बजाए विपरीत परिणाम देखें जा रहे हैं। सत्य की खोज के नाम पर तो ऐसा सम्भव नहीं। ऐसी विषम परिस्थितियों में हमें भगवान आदि शंकराचार्य के अद्भुत, उदात्त, समन्वयात्मक एवं सत्यपरक संदेश की पुनः अत्यंत आवश्यकता है। आज उनके द्वारा प्रदत्त संदेश को जनमानस तक पहुँचाने की अत्यंत आवश्यकता है।

## आचार्य के कार्य

भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य ने अपनी ३२ वर्ष की अल्पायु में वेदों के मूलभूत 'अद्वैत सिद्धान्त' की पुनः स्थापना के लिए तथा जगदोद्धार के लिए अद्‌भुत एवं अनगिनत कार्य किये। उनके महत्वपूर्ण कार्यो का सार इस प्रकार से है।

१. वैदिक दर्शन के विरोधी एवं नास्तिक बौद्ध दर्शन को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया, और सनातन धर्म की पुनः स्थापना की।

२. समस्त सम्प्रदायों की साधना को उचित स्थान एवं आदर प्रदान करते हुए 'अद्वैत तत्त्व' रूपी लक्ष्य सिद्धि में उसकी भूमिका बताते हुए समन्वय स्थापित किया।

३. अपनी प्रसन्न-गम्भीर शैली में प्रस्थान त्रयी (श्रीमद्‌ भगवद्‌ गीता, दस उपनिषद्‌ एवं ब्रह्मसूत्र) पर भाष्यरचना करके उपनिषद्‌ अर्थ को सुगम बनाया। इसके अलावा अनेकों काव्य, स्तोत्रों एवं प्रकरणग्रन्थों की रचना करी।

४. वेदिक सिद्धान्तों को लोकप्रिय बनाकर, उपनिषदों का गौरव बढ़ाने वाले वे सर्व प्रथम आचार्य थे।

५. भारत की चारों दिशाओं में चार मठों को धर्म संस्थापना एवं धर्म प्रचार के लिए स्थापित किया। दशनामी संन्यासी सम्प्रदाय की रचना करी। तथा इसके माध्यम से भारत में एकता स्थापित करी।

६. तांत्रिको में प्रचलित घृणित प्रवृत्तियों को दूर किया।

७. वेदान्त के मूल संदेश को प्रसारित करते हुए आबाल वृद्ध के उद्धार के लिए तथा अद्वैत की अवस्था में जागृति के लिए अलौकिक कार्य किये। तथा अनेकों तीर्थस्थानों एवं मन्दिरों का उद्धार करते हुए लोगों की आस्था को पुनर्जीवित किया।

ऐसे ही महान आचार्य के द्वारा रचित यह आत्मबोध नामक वेदान्त का प्रकरण ग्रंथ है।

## खण्ड - २

## खण्ड – ३



## खण्ड – ४

## खण्ड – ५



## खण्ड – ६



## खण्ड – ७

Index Page of PDF Resources